मरने वालों की इच्छायें

أمنيات الموتى

تأليف : محمد بن إبراهيم النعيم رحمه الله

लेखकः मुहम्मद बिन इब्राहीम अन-नईम (रहिमहुल्लाह)

ترجمة : عطاء الرحمن بن عبد الله السعيدي

अनुवादः अताउर्रहमान सईदी

مراجعة : أفروز عالم مدني حفظه الله

संशोधकः अफ़रोज़ आ़लम मदनी

दारुल खैर फाउन्ड़ेशन कौसा, मुंब्रा, मुम्बई

5, लेक पलाज़ा, तलाव पाली रोड, कौसा, मुंब्रा,
जनपद थाने, महाराष्ट्रा

मोबाइल न.: 9594690742 / 8454024219

नाम पुस्तिका : **मरने वालों की इच्छाय**

लेखक : मोहम्मद बिन इब्राहीम अल–नईम

अनुवादक : अताउर्रह़मान सईदी

संशोधक : अफ़रोज़ आलम मदनी

पृष्ठ संख्या : 37

प्रकाशन संख्या : 1500

प्रकाशन वर्ष : जनवरी 2017

प्रकाशक : **दारुलख़ैर फाउन्देशन**
५, लेक पलाज़ा, तलाव पाली,
कौसा, मुंब्रा, ज़िला थाने-४००६१२
मोबाइल न. 9594690742
darulkhair.network@gmail.com
www.darulkhair.in

प्रकाशक की ओर से

हमें यह बात अच्छे प्रकार मालूम है कि अल्लाह पाक ने जिन्नात एवं मनुष्यों को एक नियुक्त उमर दे कर मात्र अपनी इबादत के लिए पैदा किया है जैसा कि सूरह ज़ारियात, आयत : 56 में है (मैंने जिन्नात एवं मनुष्यों को मात्र इसलिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें) अतः अल्लाह ने जीवन एवं मृत्य हमारी परीक्षा के लिये बनाया है जैसा कि सूरह मुल्क, आयतः 2 में है (जिसने जीवन तथा मृत्यु को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारी परीक्षा ले कि तुममें से अच्छे कर्म कौन करता है तथा वह प्रभावशाली एवं क्षमा करने वाला है।)

अल्लाह पाक ने अपने शुभ कुरआन तथा प्यारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लाम के द्वारा सत्य, असत्य, नेकी, बदी तथा स्वर्ग एवं नर्क के मार्ग भी बयान कर दिया है। तथा यह स्पष्ट कर दिया है कि जिसने ज़र्रह के बराबर भी पुण्य किया होगा वह उसे देख लेगा तथा जिसने ज़र्रह के बराबर भी पाप किया होगा, वह उसे देख लेगा।

यह हम जानते हैं कि पुण्य या पाप करने का स्थान संसार है, पुण्य का फल मीठा लाभदायक तथा पाप का फल कड़ुवा तथा हानिकारक है। मृत्यु के समय या

उसके बाद कोई ज़र्रह बराबर पुण्य करना चाहे तो कादापि उसे अवसर नहीं मिलेगा, जब तक हम जीवित हैं जो चाहें करलें वरना अफसोस करना पड़ेगा।

निःसंदेह इस पुस्तिका - أمنيات الموتـــــــــى - मरने वालों की इच्छायें में लेखक ड़ा.मुहम्मद बिन इब्राहीम रहमतुल्लाह अ़लैहि ने(जिसका अनुवाद हमारे मित्र अताउर्रहमान बिन अब्दुल्लाह सईदी हफिज़हुल्लाह ने किया है) बड़े ही अच्छे प्रकार इस बात को समझाया है कि हे लोगो मृत्यु के बाद लाभ देने वाले कर्म बढ़ चढ़ कर करलो वरना पछताओगे तथा इस पछतावा से कोई लाभ न होगा। इस पुस्तिका के पढ़ने के बाद मैने अनुभूत किया कि इस प्रकार की पुस्तिकायें लोगों के लिए अति लाभदायक हैं इसी कारण दारुल खैर फाउंड़ेशन मुम्बई से इसे प्रकाशित किया जा रहा है अल्लाह से दुआ़ है कि वह इस पुस्तिका को लेखक, अनुवादक, प्रकाशक तथा पढ़ने वालों कि लिए सदकह जारियह बनाये और कबूल करे आमीन।

निर्देशक :

शमीम अहमद अबदुल हलीम मदनी

दारुल खैर फाउन्ड़ेशन मुम्बई

مقدمة المؤلف

भूमिका

इस जीवन में हर मनुष्य की अनेक तथा अधिक कामनायें हैं। और विभिन्न दृष्टि से यह सारी कामनायें भी विभिन्न हैं। उन्ही में से वह समाज जिसमें आदमी जीवन बिताता है, वह सोच जिसपर वह पलाबढ़ा तथा उसका पालनपोषण हुवा है ,उसके साथी तथा संगाती जो उसके आस पास रहते हैं ।

अगर आप किसी से पूछें कि इस जीवन में आपकी इच्छा क्या है ? तो अगर वह फ़क़ीरो (कंगालों) में से होगा, तथा उसने निर्धनता (फ़क़ीरी) देखी होगी, कंगाली का दुख झेला होगा तो उसकी इच्छा होगी कि वह धनी होकर जीवन बिताये, वह गाड़ी घोड़े तथा मकानों,ज़मीनों का मालिक हो ताकि सुखी (भोग विलास) जीवन बिता सके जिस प्रकार अधिक लोग बिताते हैं।

ओर अगर आप ऐसे रोगी से मिलें जिसके रोग ने उसे चारपाई पर लेटा दिया है, जो हिल नहीं सकता, जिसकी आज़ादी छिन गई है यहाँ तक कि खाने पीने तथा नींद (निद्रा) की स्वाद से वंचित होगया है। आप ऐसे रोगी से उसकी इच्छा पूछें ? तो उसकी इच्छा अपने रोग से सुख

पाना होगी चाहे उसे अपना सभी धन दान करना पड़े।

आप अगर कुछ धनवानों से उनकी इच्छायें पूछें, तो आप उन्हें और अधिक धन चाहने वाला पायेंगे, ताकि वे फलाँ फलाँ से अधिक धनवान हो जायें। तथा इसी प्रकार कंगाल संतुष्ट नहीं होता और धनवान का पेट नहीं भरता, संसार की इच्छायें समाप्त नहीं हो सकतीं।

अल्लाह के रसूल सल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सच फरमायाः

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ لَوْ أَنَّ لِابْنِ آدَمَ وَادِيًا مِنْ ذَهَبٍ أَحَبَّ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَادِيَانِ وَلَنْ يَمْلَأَ فَاهُ إِلَّا التُّرَابُ وَيَتُوبُ اللهُ عَلَى مَنْ تَابَ (صحيح البخاري)

अर्थः अनस् रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि रसूल सल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया : अगर मानव जाति के लिए सोने की एक वादी (घाटी) हो तो वह दो वादी चाहेगा, उसका मुंह मिट्ट ही भर सकती है, तथा अल्लाह तौबह (पश्चाताप) करने वाले की तौबह कुबूल करता है। (सही बुखारीः 6439-सही मुस्लिमः 1048)

अर्थातः मानव जाति सदैव मृत्यु तक आजीवन) संसार का लोभी होता है, तथा उस का पेट उस की कब्र की मिट्टी से ही भरेगी।

मानव जाति के इन विभिन्न इच्छाओं के साथ साथ सारे

लोग पूरी जीवन (आजीवन) अपनी अपनी इच्छायें पूरी करने के लिए भाग दौड़ तथा अधिक प्रयास करते हैं, और कभी कभार अल्लाह उनकी इच्छायें पूरी कर देता है जब वे उसके साधनो का प्रयोग करते हैं।

प्रन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जिन्की इच्छायें पूरी नहीं होतीं. तथा उनकी मांगों पर ध्यान भी नहीं दिया जाता. तो यह कौन लोग हैं? तथा उनकी इच्छायें क्यों पूरी नहीं होतीं? और क्या हम उनका सहयोग कर सकते हैं या उन का नर्क की अगनी मे जलना कम कर सकते हैं ?

ऐसे लोग जिनकी इच्छायें पूरी नहीं होतीं तो वह लोग हैं जो ऐसे पापों के गिरवी हो चुके है जिस से आज़ाद नहीं किये जायेंगे, ऐसे अजनबी (अपरिचित) यात्री के प्रकार हैं जिनका इन्तेज़ार (प्रतिक्षा) नहीं किया जाता। वे मृतक हैं, "ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिललाह"

हे विचारकर्ता मेरे भाई ! मुर्दे (मृतक लोग) क्या इच्छा करेंगे ? तथा कौन उनकी इच्छायें हम से बयान कर सकता है, जबकि उनके बारे में हमें कोई सूचना नहीं, और उनके यादगार (स्मारक,चिन्ह) मिट गये ?

आइये थोड़ा इन लोगों के बारे मे बात करें जो भूले जाचुके, ताकि हम उन लोगों की इच्छायें जान सकें जिनकी

निगाहें तेज़ हो चुकी हैं, अतः वे स्वर्ग अथवा नर्क और अल्लाह तआ़ला के फरिश्तों को देख चुके,उनके हेतु (परोक्ष) ग़ैब हाज़िर (प्रत्यक्ष) के प्रकार हो गया, संसार तथा आखिरत (परलोक) की हक़ीकत (वास्तविकता) अच्छे प्रकार जान गये, अपने बरज़ख़ी जीवन ही में यक़ीन तथा विश्वास कर चुके कि वे बड़े दिन(महाप्रलय के दिन) उठाये जायेंगे। तो क्या वे इस संसार में पुनःलौटने की इच्छा करेंगे ताकि जीवन से लाभ उठा सकें अथवा उसका स्वाद ले सकें? या और अधिक ज़मीनों और मकानों के मालिक हो सकें ? तथा ज़मीन पर खेलकूद या भ्रमण कर सकें ?

इस संसार में अधिकांश लोगों की इस से अधिक इच्छा नहीं होती कि उन के पास अच्छी नोकरी हो, सुन्दर पत्नी हो, बेहतरीन सवारी हो, बड़ा तथा कुशादह घर हो, ज़मीन, मकान, दुकानें और पलाटें व फलेटैं हो, चहल पहल, मनोरंजन और भ्रमण हो, विभिन्न कार्यक्रमों और शादी विवाह में उपस्थिति हो आदि।

प्रन्तु मुर्दे (मृतक)! तो वे इस संसार से क्या चाहेंगें जिस से जा चुके, उस से धोके में रहे, अब संसार की हक़ीक़त जान गये, बिना वापसी के उसे अपने पीछे छोड़ गये ?

आइये हमारे रब की किताब तथा हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत ने जो नेक तथा बुरे मुर्दों (मृतकों) की इच्छाओं के बारे में बयान किया है पढ़ें !

[पहला] नेक लोगों की इच्छायें

1- जब मोमिन (विश्वासी) मर जाता है और काँधों पर उठाया जाता है, तो वह पुकार लगाता है कि उसे क़ब्र की ओर जल्दी जल्दी, तेज़ ले चलें ताकि वह सदैव की बैकुन्ठ पाले।

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا وُضِعَتْ الْجِنَازَةُ فَاحْتَمَلَهَا الرِّجَالُ عَلَى أَعْنَاقِهِمْ فَإِنْ كَانَتْ صَالِحَةً قَالَتْ قَدِّمُونِي قَدِّمُونِي وَإِنْ كَانَتْ غَيْرَ صَالِحَةٍ قَالَتْ يَا وَيْلَهَا أَيْنَ يَذْهَبُونَ بِهَا يَسْمَعُ صَوْتَهَا كُلُّ شَيْءٍ إِلَّا الْإِنْسَانَ وَلَوْ سَمِعَهَا الْإِنْسَانُ لَصَعِقَ

अबू सईद खुद्री बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया : जब जनाज़ह (अर्थी) रख दिया जाता है,और लोग उसे अपने कंधों पर उठाते है अगर नेक है तो कहता है : मुझे आगे बढ़ाओ मुझे आगे बढ़ओ, और अगर नेक नहीं है तो कहता है : हाय रे बरबादी उसे कहाँ लेजा रहें है ? उसकी आवाज़ मनुष्य के अतिरिक्त सभी सुनते है,और अगर मनुष्य सुन लें तो चिल्ला उठें। (इमाम

अहमद-अल्फतहुर्रब्बानी-(8/2) सही बुख़री /1380- नसई /1908)

2 - और जब अपने क़ब्र में दाखिल कर दिया जाता है तथा उसे स्वर्ग की शुभसूचना दी जाती है, र्स्वग में वह अपना ठेकाना एवं स्थान देख लेता है, तो वह संसार की ओर वापसी की इच्छा नहीं करता बल्कि वह महाप्रलय के दिन अथवा क़ियामत कायम होने की इच्छा करता है, ताकि वह उस सदैव की नेअ़मत में दाखिल हो जाये जिसका वह इन्तेज़ार (प्रतिक्षा) कर रहा था। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने बताया है कि जब मोमिन बन्दह अपनी क़ब्र में दोनों फरिश्तों के प्रश्नों के उत्तर देलेता है.०००००० तो आकाश से पुकारने वाला पुकारता हैः मेरे बन्दे ने सच्च कहा तो इस के लिए स्वर्ग से बिस्तर (शय्या) बिछा दो, उसे स्वर्ग का कपड़ा (वस्त्र) पहना दो, उसके लिए स्वर्ग की ओर द्वार खोल दो, अतः उस तक उसकी हवाऐं तथा सुगन्ध आती है, और उसकी क़ब्र को जहाँ तक उसकी निगाह पहुँचती है उतना कुशादह (विशाल) कर दिया जाता है, और उसके पास अच्छी सुगन्ध, अच्छे वस्त्र, अच्छे मुखड़े वाला आदमी आता है, तथा उस से कहता हैः शुभ सूचना है आप के लिए उस चीज़ की जो आप को पसन्द है, यही आपका वह दिन है जिस का

आप से वादा (वाचा) किया जाता था, तो क़ब्र वाला आदमी यानी मुर्दा कहेगाः आप कौन हैं? आप का चेहरा वह चेहरा है जो भलाई ही लेकर आयेगा, तो वह उत्तर देगाः मैं तेरा नेक अमल(सत्कर्म) हूँ, तो मुर्दा कहेगाः हे मेरे रब क़ियामत क़ायम कर दे, हे मेरे रब क़ियामत क़ायम कर दे, ताकि मैं अपने बाल बच्चों तथा धन की ओर वापस हो जाऊँ.....)
(इमाम अहमद -फतहुर्रब्बानी-7/74), अबूदाऊदः 4753), हाकिमः 1/380) तथा इब्ने खुज़ैमह, अल्लामह अल्बानी ने सहीहुलजामेअ़ में सही कहा है 1676)

3- सही हदीस में है कि जब मोमिन् को उसकी कब्र में स्वर्ग की शुभ सूचना दी जाती है, तो वह अपने परिवार की ओर लौटने की इच्छा करता है ताकि उन्हें नर्क से अपनी मुक्ति पाने, तथा स्वर्ग पाजाने पर सफलता की शुभ सूचना दे, जैसा कि जाबिर बिन् अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः

(إذا رأى المؤمن ما فسح له في قبره, فيقول: دعوني أبشر أهلي). وفي رواية. (فيقول: دعوني حتي أذهب فأبشر أهلي, فيقال له: اسكن)

(जब मोमिन् अपनी क़ब्र को कुशादह (विशाल) देखता है, तो वह कहता हैः मुझे छोड़ो मैं अपने परिवार को खुशखबरी तथा शुभसूचना दे दूँ, तथा ऐक हदीस में है मुझे

छोड़ो मैं अपने परिवार के पास जाऊँ और उन्हें खुश्खबरी सुनाऊँ, तो उस से कहा जाता हैः ठहरो (इमाम अहमदः - अल् फतहुर्रब्बानी- 8/127), सहीहुल्जामेअ़ः 557)

अललाह ने यासीन वाले (जिस की कथा सूरह यासीन में है) की कहानी बयान किया है जो अपनी क़ौम (जाति) की हिदायत (पथ प्रदर्शन) का बहुत इच्छुक था, मगर उन लोगों ने उसकी हत्या करदी, जबकि वह उन्हें अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान की दावत (आवाहन) दे रहा था, जब उसने अल्लाह की ओर से अपनी करामत (अभि वादन,महिमा) तथा स्वर्ग पाने में सफलता देखी, तो उसने इच्छा किया कि इसकी सूचना अपनी जाति को दे ताकि वे ईमान ले आयें, इसी का बयान अल्लाह तआ़ला ने इस प्रकार किया है।

﴿قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ قَالَ يَالَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ (٢٦) بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ (٢٧)﴾ يس: ٢٦ - ٢٧

अर्थः (उस से) कहा गया कि स्वर्ग में चला जा,कहने लगा,काश कि मेरी जाति को भी ज्ञान हो जाता कि मुझे मेरे रब्ब ने क्षमा कर दिया तथा मुझे सम्मानित व्यक्तियों में से कर दिया (सूरह यासीनः 26-27)

अर्थात उस ने इच्छा किया कि उसकी जाति जिन लोगों ने अल्लाह के धर्म से लड़ाई (युद्ध) किया तथा अल्लाह

के आदेशों को नकारा,जान लें कि अल्लाह ने उसे कितना अच्छा फल तथा बैकुण्ठ प्रदान किया है।

4 - रहा शहीद (वीरगतिप्राप्त) तो उसके उसे महान पद के बावजूद जिसे वह देखेगा, जो उसके लिए स्वर्ग में उत्तम पद तय्यार किया गया हैं, वह संसार की ओर लौटने की इच्छा करेगा, ताकि वह अल्लाह के दुशमनों (शत्रु) से बराबर युद्ध करे, मारे तथा मारा जाये चाहे दसियों बार, क्यों कि वह युद्ध के फल तथा युद्ध करने वालों का अल्लाह के पास क्या उत्तम पद है जानता है। जैसा कि हदीस में है, हमारे सच्चे नबी ने अल्लाह के मार्ग में शहीद होने वाले की इच्छाओं के बारे में जो कहा है उसे सुनेंः

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنْ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا أَحَدٌ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يُحِبُّ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا وَلَهُ مَا عَلَى الْأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا الشَّهِيدُ يَتَمَنَّى أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ لِمَا يَرَى مِنْ الْكَرَامَةِ

अर्थः अनस् बिन् मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः स्वर्ग में चले जाने के बाद शहीद के सेवा कोई ऐसा नहीं है कि संसार मे अपनी कोई चीज़ लेने के लिए वापस होना पसन्द करे, प्रन्तु शहीद इच्छा करेगा कि वह संसार की ओर लौटे, और वह दसियों बार कतल

किया जाये, यह उस अभिवादन तथा इज़्ज़त के कारण होगा जो उसे प्राप्त होगी। (सही बुखारीः2817, सही मुस्लिमः1877)

तथा दुसरे बयान में हैः नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः स्वर्ग में चले जाने के बाद शहीद के सेवा कोई ऐसा नहीं है कि संसार मे अपनी कोई चीज़ लेने के लिए वापस होना पसन्द करे, प्रन्तु शहीद इच्छा करेगा कि वह संसार की ओर लौटे, और वह दसियों बार कतल किया जाये, यह उस अभि वादन तथा इज़्ज़त के कारण होगा जो उसे प्राप्त होगी।

روى جابر بن عبد الله يقول: لقيني رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال لي: يا جابر ما لي أراك منكسرا ؟ قلت يا رسول الله استشهد أبي قتل يوم أحد وترك عيالا ودينا, قال: (أفلا أبشرك بما لقي الله به أباك) ؟ قال: قلت: بلى يا رسول الله, قال: ما كلم الله أحدا قط إلا من وراء حجاب, وأحيا أباك فكلمه كفاحا فقال: يا عبدي تمن علي أعطك, قال: يا رب تحييني فأقتل فيك ثانية, قال الرب عز وجل: إنه قد سبق مني أنهم إليها لا يرجعون) قال: وأنزلت هذه الآية ﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا﴾

अर्थः जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है किः एक दिन नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मुझ से मिले तो मुझ से कहा : हे जाबिर क्या बात है आप टूटे हुये शोकाकुल एवं गमगीन दिख रहे हो ? तो मैंने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल मेरे पिता शहीद कर दिये गये, उहुद के दिन कतल कर दिये गये, और परिवार तथा क़रज़ छोड़ गये, आप ने फरमायाः क्या मैं तुम्हें उस चीज़ की शुभ सूचना न दे दूँ, जिस के साथ अल्लाह तआ़ला ने आप के पिता से मुलाक़ात की है ? कहते हैंः मैंने कहाः क्यों नहीं ऐ अल्लाह के

रसूल, आप ने फरमाया : अल्लाह तआ़ला ने जब भी किसी से बात किया है तो परदे के पीछे से, मगर तुम्हारे पिता को ज़िन्दा किया तथा उन से बिना तरजुमान(अनुवादक) आमने सामने बात किया और कहाः ऐ मेरे बन्दे एवं दास मुझ से तुम इच्छा करो मैं तुम्हें दूँगा, उन्हों ने कहा : हे मेरे रब(प्रतिपालक) तू मुझे ज़िन्दा कर दे ताकि में तेरे मार्ग में पुनः क़तल किया जाऊँ,तो अल्लाह तआ़ला ने कहा : मैं यह फैसिला कर चुका हूँ कि लोग उससंसार (की और पुनः वापस न होंगे,तथा यह आयत उतरी)

﴿وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا﴾

(और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गये उन्हें मृत न समझो) सूरह आले इमरान/169- (इसे तिरमिज़ी ने (3010) (और इब्ने माजह ने (190) बयान किया है, तथा शैख अल्बानी ने सही इब्ने हिब्बान में हसन कहा है/1926)

[दूसरा] बुरे लोगों की इच्छायें

अललाह के हुकूक़ तथा अधिकार में कमी करने वाले के दिनों की घड़याँ खेल कूद तथा लापरवाही में बीत जाती हैं, तौबह(पश्चाताप)में लापरवाही तथा लम्बी उमर की आशा करता है। तथा यह नहीं जानता कि मृत्यु अचानक आती है, और आने के बाद आदमी को खोई हुई चीज़ को पूरी करने का समय नहीं देती, अतः वह अपनी समाधि में

अपनी करनी के बदले गिरवीं होता है, जो कुछ उस से खो गया उस पर अफसोस करता तथा दुखी होता है,अतः अल्लाह तआ़ला से बेफायदा, ना पूरी होने वाली अनेक इच्छायें करता है। इस अवसर पर थोड़ा हम सोचें अल्लाह के बारे में कमियाँ करने वाला मृत्यु के बाद क्या क्या आशायें तथा इच्छायें कर सकता है ?

[1] सलात(नमाज़) चाहे दो ही रकअ़त :

पापी तथा अल्लाह के बारे में कमी करने वाला इच्छा करेगा कि उसे केवल दो ही रकअ़त नमाज़ पढ़ने के लिये पुनः जीवन मिल जाये। जैसा कि अबू हुरैरह रज़ियल्लाहू अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल एक क़ब्र(समाधि) के पास से गुज़रे तो आप ने पूछा : (यह किस की क़ब्र है?) लोगों ने कहाः फलाँ की, तो आप ने फरमाया :

رَكْعَتَانِ أَحَبُّ إِلَى هَذَا مِنْ بَقِيَّةِ دُنْيَاكُم

((इस के यहाँ तुम्हारे संसार के बाक़ी भाग से अधिक प्रिय तथा महबूब दो रकअ़त सलात (नमाज़) है)) (इसे तबरानी ने बयान किया है तथा अल्बानी ने सही तरग़ीब व तरहीब/391,में सही कहा है।) और एक हदीस में है आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः दो हलकी रकअ़त जिसे तुम मामूली तथा हक़ीर (तुच्छ) और नफ़ल समझ कर ध्यान नहीं देते जो कि बन्दे के

अमल में बढ़ोत्री करता है इस के यहाँ उसकी संसार की बाकी चीज़ों से प्रिय एवं महबूब है (इसे इब्ने मुबारक ने बयान किया है तथा शैख अल्बानी ने सहीहुल् जामेअ़ः3518 में सही कहा है)

अतः पापी और अल्लाह के बारे में कमी करने वाले मुरदे (मृतक) की सबसे अधिक इच्छा यह होगी कि उसकी उमर बढ़ा दी जाये ताकि वह दो रकअ़त सलात पढ़ कर अपनी नेकियाँ बढ़ा ले,तथा अल्लाह की नाफरमानी (अवज्ञा) में अपनी खोई हुई उमर की पूर्ति कर ले। क्या आपने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वह वसीयत नहीं सुनी जो आप ने हम ज़िन्दह लोगों को की :

(الصلاة خير موضوع، فمن استطاع أن يستكثر فليستكثر)

अल्लाह की बनाई हुई चीज़ों में सबसे अच्छी चीज़ सलात(नमाज़) है अतः जो ज़्यादा कर सके वह ज़्यादा करे (इसे तबरानी ने बयान किया है तथा शैख अल्बानी ने सहीहुल् जामेअ/3870 में हसन कहा है)

(निःसंदेह उस मैयित (मृतक) ने अपनी समाधि में सलातनमाज़) का फल तथा सवाब देख लिया,और अपनी निगाहों से सलात का लाभ महसूस कर लिया,अब अल्लाह की नाफरमानी तथा अवज्ञा में अपने बिताये हुए दिनों और खेल कूद अथवा लापरवाही में गुजारे समय पर गमभीर तथा बहुत अधिक अफसोस (खेद), दुख करेगा। इस समय

उसके हाथ हसरत व शरमिन्दगी (अभिलाषा, पश्चताप) के अतिरिक्त कुछ न लगा। हम देखें अल्लाह के रसूल ने हम से उस मृतक की जबकि वह अपनी समाधि में होगा इच्छा को बयान किया है, वह सलात पढ़ने की इच्छा करेगा, कुछ ही समय के लिए वह संसार में वापसी की इच्छा करेगा ताकि मात्र दो ही रकअ़त सलात पढ़ ले, वहाँ संसार की केवल दो ही रकअ़त सलात चाहेगा। हाये मेरे अल्लाह मैं तेरी पाकी तथा पवित्रता बयान करता हूँ क्योंकि केवल दो ही रकअ़त अब उसके यहाँ संसार तथा संसार की सभी चीज़ों के बराबर हो गई। अब उसे संसार क्या लाभ दे सकता, जबकि वह उसे अपने पीछे छोड़ चुका, तथा अपनी करनी और अमल का गिरवीं और बंधक हो गया?

किसी कवि ने क्या खूब कहा है:

فعسى أن يكون موتك بغتة اغتنم في الفراغ فضل ركوع
كم صحيح رأيت من غير سقم ذهبت نفسه الصحيحة فلتة

फुरसत (अवकाश) में एक रकअ़त की फज़ीलत (प्रमुखता) को गनीमत (परिहार) समझो, हो सकता है आप की मौत अचानक हो, आपने कितने ऐसे तन्दुरुस्त (नीरोग) को देखा हैं कि उनकी प्राण बिना रोग के पल भर में निकल गई है।

तो मरने वालों (मृतकों) की अपनी समाधि में सबसे अधिक इच्छा एक घंटा बल्कि एक मिनट का जीवन पाना

जिसमें वह अपनी खोई हुई चीज़ जैसे तौबह(पश्चाताब) नेक अमल एवं सत्य कम की पूर्ति करलें। प्रन्तु हम संसार वाले तो हम अपने बहुमूल्य और क़ीमती समय को खोते हैं। हम अपने समय के हत्यारे तथा घातक की खोज में लगे रहते हैं ताकि हमारी उमर अल्लाह की नाफरमानी में बेलाभ खो जाये, यहाँतक कि हम में से तो कुछ लोग जान बूझ कर अपनी उमर अल्लाह की नाफरमानी में बिताते,जबकि हम कादापि नहीं जानते कि हमारी समाधि ने हमारे लिये क्या छिपा रखा है, आराम एवं नेअ़मत या दुख तथा कष्ट और प्रकोप। हम नमाज़ के लिये बुलाने वाले अज़ान देने वाले की अज़ान सुनते प्रन्तु जिसे बुलाया और पुकारा जा रहा है लगता है वह जीवित तथा ज़िन्दह ही नहीं।

[2] सदक़ह दान)

मरने वाले मृतक लोग संसार में कुछ ही समय के लिये लौटने की इच्छा करते हैं ताकि वे अल्लाह के लिये सदकह तथा दान करें, अल्लाह ने उनकी इस इच्छा को इस प्रकार बयान किया है।

﴿وَأَنفِقُوا مِن مَا رَزَقْنَاكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِّنَ الصَّالِحِينَ (١٠) وَلَن يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا

تَعْمَلُونَ(١١)﴾ المنافقون:١٠-١١

अर्थः तथा जो कुछ हमने तुम्हें प्रदान कर रखा है उसमें से हमारे मार्ग में इस से पूर्व खर्च करो कि तुम में से किसी को मृत्यु आ जाये, तो कहने लगे कि हे मेरे रब ! मुझे तू थोड़ी देर की छूट क्यों नहीं देता ? ताकि मैं दान दूँ तथा सदाचारी लोगों में से हो जाऊँ। तथा जब किसी का निर्धारित समय आजाता है फिर उसे अल्लाह तआ़ला कदापि अवसर नहीं देता,तथा जो कुछ तुम करते हो,उस से अल्लाह तआ़ला भली-भांति अवगत है। (सूरह मुनाफिक़ून/10-11)

निःसंदेह वे संतुष्ट हो गये-प्रन्तु समय खो जाने के बाद-कि सदक़ह अथवा दान अल्लाह तआ़ला के यहाँ सबसे प्रिय कामों में से है,तथा यह अल्लाह पाक के गज़ब(क्रोध) को बुझाता है, और बन्दे से पूछ ताछ होगा कि उसने कहाँ से धन कमाया तथा किस में खर्च किया,तो अब दान करने के लिये वापसी की इच्छा करेंगें जबकि उन्हों ने फक़ीर तथा कंगाल को अपने जीवन में दान देने से कतराये और धन को अपने सैर व तफरीह ,पिकनिक मनाने तथा अपनी शहवत में इच्छा अनुसार खर्च किया।

﴿ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصَّدَّقَ﴾ المنافقون: ١٠

अर्थः तो कहने लगे कि मेरे रब! मुझे तू थोड़ी देर की छूट क्यों

नहीं देता कि मैं दान दूँ (सूरह मुनाफिकून/10)

वह वापसी की इच्छा करेगा क्यों कि उसे पता चल गया कि दान तथा सदक़ह सारे अमलों एवं कर्मों से अफ़ज़ल और सर्वोत्तम है। निःसंदेह उमर बिन् खत्ताब रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फरमाया हैः मुझे बताया गया है कि सारे अ़मल आपस में एक दूसरे पर गर्व करेंगे तो दान कहेगा मैं तुम में सबेसे अफ़ज़ल तथा सर्वोत्तम हूँ। इसे हाकिम ने 1/416 में बयान किया है तथा अल्बानी ने सही तरग़ीब व तरहीब में सही कहा है)

उस ने दान करने का फल तथा उस में लापरवाही करने की सज़ा जानने के बाद संसार की ओर लौटने की इच्छा दान करने के लिए किया, सत्य में यह अफसोस और अभिलाषा तथा खेदजनक एवं अफसोस से भरी इच्छा है प्रन्तु समय खो जाने के बाद यह इच्छा तथा आशा आई।

[3] नेक अ़मल तथा सत्कर्म

तीसरी इच्छा जो यह मृतक करेंगें,वह है सांसार में वापसी चाहे कुछ ही पल के लिए हो, ताकि नेक हो जायें,कुछ भी नेक कर्म कर लें,जो कुछ इन्हों ने खराब किया है उसे सही कर लें,और अल्लाह पाक की हर की हुई नाफरमानी में उसकी फरमाँबरदारी (आज्ञापान) कर लें, अल्लाह को याद कर लें चाहे एक ही बार, एक ही बार

सुबहानल्लाह कह लें, एक ही बार लाइलाहा इल्लल्लाह कह लें, प्रन्तु इन्हें इजाज़त तथा अनुमति कदापि न मिलेगी, इनकी इच्छा पूरी न होगी,

إنا لله و إنا إليه راجعون

इन्हीं लोगो के बारे में अल्लाह पाक ने फरमाया है :

﴿حَتَّى إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ (٩٩) لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ (١٠٠)﴾ المؤمنون: ٩٩-١٠٠

अर्थः यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मृत्यु आने लगती है तो कहता है कि हे मेरे रब! मुझे वापस लौटा दे। कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर पुण्य का काम करूँ, कभी ऐसा नही होने का, यह केवल एक बात है जिस का यह कहने वाला है। उन के पीठ के पीछे तो एक पट है, उन के पुनःजिन्दा होने वाले दिन तक। (सूरह मुमिनूनः99-100)

मौत आने के बाद अल्लाह के साथ कमी करने वालों का यही हाल होगा, वह कहेगाः हे मेरे रब! मुझे वापस लौटा दे। कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर पुण्य का काम करूँ, तथा कहेगाः

﴿لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ﴾ الزمر: ٥٨

अर्थः काश! किसी तरह मेरा लौट जाना हो जाता तो मैं भी नेक लोगों में हो जाता। (सूरह ज़ुमर:58)

पापी तथा अल्लाह की नाफरमानी करने वाले पर जब मौत धावा बोलती है, तथा उसके सभी पाप उसे घेर लेते हैं, और उसकी आँखों का परदह खुलता है,तो चीख उठता हैः हाये रे मेरी इच्छा, हाये रे मेरा कितना बुरा ठेकाना है, हे मेरे रब मुझे वापस कर दे ताकि में कोई नेक काम कर लूँ, यही उसकी एक इच्छा होगी।

मृतकों का समय उनके जीवन में समाप्त हो गया,अब तो उन्हों ने आखेरतमहाप्रलय) देख लिया, तथा अच्छे प्रकार जान लिया कि क्या उन के लिये है और क्या उनके ऊपर है, वे जान गये कि वे अपने बहुमूल्य समय ऐसे कर्मों मे बिताते थे जो प्रलय के दिन उनके लिये कदापि लाभ दायक नहीं हुये। उस खोए हुये समय का मूल्य नहीं लगाया जा सकता, वे दया,कृपा तथा नेअमत में थे प्रन्तु वे उस से लाभ न उठा सके, आज वे मात्र एक नेकी करने की इच्छा कर रहे हैं ताकि उनके नेकी का तराजू भारी और उनकी सज़ा कम हो जाये,तथा उनका रब प्रसन्न हो जाये, मगर यह नहीं कर सकते, हाय यह लोग किस निराशा,अभि लाशा, संकोच और हसरत का जीवन बिता रहे हैं?

अधिक्तर लोग अल्लाह तआ़ला की नेअ़मतों उपकारों) के बारे में उस समय लापरवाही करते हैं जब उन्हें इन नेअ़मतों का धोका तथा धमंड़ हो जाता है, और इन नेअ़मतों का महत्व तथा प्रमुखता उस समय जान पाते है जब यह उनसे खो जाती हैं, तो निःसंदेह जब तक हमारे प्राण हमारे शरीरों में हैं हम जीवित लोग बहुत बड़े दया तथा नेअ़मत में हैं इस लिये हमें अल्लाह पाक का ज़िक्र और स्मरण तथा आज्ञापालन अधिक से अधिक करनी चाहिये।

हे इस पुस्तिका के पढ़ने वाले ! क्या आप को ज्ञान नही है कि हमारे रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने हमें आदेश दिया है कि हम नींद से जागने के बाद अल्लाह तआ़ला की प्रशंसा तथा हम्द बयान करें,क्योंकि उसने हमें मारने के बाद फिर जीवित किया तथा उसे याद करने का आज्ञा दिया ? क्यों कि नींद एक प्रकार की दूसरी मौत है जिसमें सोने वाला अल्लाह की याद से रुका रहता है।

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमाया : जब तुम मे से कोई नींद से जागे तो कहे

الحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي عَافَانِي فِي جَسَدِي، وَرَدَّ عَلَيَّ رُوحِي وَأَذِنَ لِي بِذِكْرِهِ.

(الترمذي ١٠٧٠٣)

((अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफानी फी जसदी, व रद्दा अलैया रूही, व अज़ेना ली बिज़िक्र रिही))

अर्थः सब प्रशंसा उस अल्लाह के लिये है जिसने मुझे मेरे शरीर में मुझे सुख दिया और मेरा प्राण मेरे पास वापस कर दिया तथा अपना ज़िक्र एवं याद करने का आदेश दिया (सुनन तिरमिज़ी/3401 अल्बानी ने सही जामेअ़/329 में हसन कहा है।)

तो हम लोग अभी जीवन जैसी नेअ़मत सुखसामग्री) के मालिक हैं ताकि अपनी नेकियां उपकारें) बढ़ा तथा अपने पाप मिटा लें, मृत्य के बाद हम उस एक एक मिनट पर अफसोस् करेंगे जो अल्लाह के ज़िक्र तथा याद से खाली खो गया और हम उसमें अल्लाह की इताअ़त एवं इबादत न करसके, इस लिये ऐसे निराशा, अभिलाशा, संकोच और हसरत का समय आने से पहले हम अपने जीवन की घड़यों तथा सिकंडों को बहुमूल्य और गनीमत समझें ताकि हमें वह इच्छा ना करना पड़े जो अब कुछ मृतक करते है।

इब्राहीम बिन् यज़ीद अ़बदी रहमतुल्लाह अ़लैहि ने कहा हैः कि हमारे पास रेयाह अल-कैसी आये तथा मुझ से कहाः हे अबू इस्हाक़ आओ हम आख़िरत (प्रलोक) वालों के पास चलें, उन से अपने समय के नज़दीक होने को सोचें, तो मैं उनके साथ चला तथा क़बरस्तान आये, और उनमें से कुक्ष क़बरों पास बैठे तो उन्हों ने कहा : ऐ अबू इस्हाक़ अगर यह

इच्क्षा करें तो क्या इच्छा करेंगें? मैंने कहा : अल्लाह की क़सम यह संसार में वापसी की इच्छा करेंगे, ताकि अल्लाह की इताअ़त और इबादत तथा अपनी सुधार कर लें तो उन्हों ने कहा : हम अभी संसार में हैं हमें अल्लाह का आज्ञा पालन, उपासना तथा इताअ़त और अपनी सुधार करनी चाहिये। फिर उठे और काफी परिश्रम किया फिर कुछ ही दिनों के बाद देहाँत करगये। (ईकाज़ु उलिल्हेमम अल्आ़लियह इला इग़तिनामिल् अय्यामिल् खालियह, अ़ब्दुल अ़ज़ीज सुलैमान पृ. /357)

अतः जब आप कब्रस्तान (समाधि स्थल) जायें तो किसी खुली समाधि के समाने खड़े होकर इस तँग समाधि के बारे में थोड़ा सोचें तथा कल्पना करें कि आप इस के भीतर हैं और आप पर इसका द्वार बन्द कर के आप पर मिट्टी ड़ाल दी गई है, तथा आपके संतान, परिवार आप को उस में छोड़ कर चले आये हैं, समाधि ने आपको अपनी अंधकार तथा भय के साथ घेर लिया है, जहाँ आप केवल अपना कर्म तथा अ़मल देख रहे हैं, इस कठिन संकट के समय आप क्या इच्छा करेंगे ?

क्या आप नेक कर्म करने, मात्र एक रकअ़त नमाज़ पढ़ने, एक बार सुबहानल्लाह कहने, केवल एक ही बार अल्लाह को याद करने के लिए संसार में वापसी की इच्छा

नहीं करेंगे ? सोचें ध्यान दें आप अभी इस समय सुस्वस्थ व तन्दुरुस्ती के साथ भूतल पर जीवित हैं, तो इस से पहले कि आप शरमिन्दगी पश्चाताप) से उंगली काटें तथा दुख से हथेली मलें और मृतकों में गिने जायें, आप की कोई इच्छा सुनने वाला ना हो, नेक अ़मल एवं सत्कर्म करें।

याद रखें समाधि में जाने के बाद संसार में वापस न हो सकेंगे, और ना ही आपके सत्कर्म अधिक हो सकेंगे, हाँ अगर आपने कोई ऐसा पुण्यकर्म और नेक काम किया जिसका सवाब तथा फल आपके मृत्य के बाद चलता रहा, तो हसरत व शर्मिन्दगी अभिलाशा- पश्चाताप) से पहले क़ियामत प्रलय)के दिन के लिये नेक अ़मल तथा सत्कर्म करें।

इब्राहीम तैमी ने फरमया हैः एक दिन मैंने उदाहरण के रूप में कल्पना किया कि मैं नर्क में हूँ, उसका ज़क्कूम एक काँटे वाला बदबूदार पेड़) खा रहा हूँ, उसका पीप मैं पी रहाहूँ,मैं बेड़ियों में जकड़ा हूँ, तो मैंने अपने मन से कहा इस दुर्दशा में तुम क्या चाहते हो ? उस ने उत्तर दिया मैं संसार में सत्कर्म तथा नेक अ़मल करने के लिये वापसी चाहता हूँ। कहते हैंः तो मैंने अपने मन से कहा तुम इच्छा में हो तो जीवन ही में अ़मल करो।

हे मेरे भाई ! हम अभी संसार में जीवित हैं जो अ़मल तथा पुण्कर्म करने का स्थान है, प्रलोक अपने कर्मों का फलगृह एवं बदला पाने का स्थान है। अतः जो यहाँ सत्कर्म और नेक काम नहीं करेगा कल वहाँ पछ्तायेगा। तथा जितने दिन आप जीवित हैं बहुमूल्य और बेहतर है, इस लिये आप इस में कदापि लापरही ना करें। क्योंकि मृतकों की अपने सामाधि में सब से अधिक इच्छा एक घंटे या कुछ मिनट की जीवन होगी। ताकि वे उस समय में जो नेक अ़मल तथा सत्कर्म छूट गया है कर लें, जिसका कदापि कोई अवसर न होगा, क्योंकि संसार के जीवन में उनका यह अवसर बीत चुका।

हे मेरे भाई ! जब कभी आप समाधिस्थल जायें या कोई मृतक एवं जनाज़ह उठायें तो उस समय आप ग़ाफ़िल(असावधान) न रहें, किसी से अधिक बात चीत में न लगे रहें, बल्कि अपने आसपास के इन मृतकों की इच्छाओं को याद करें, जो अपने अपने कर्मों के गिरवीं हैं। जीवन में अपने समय तथा आयु को बहुमूल्य एवं ग़नीमत समझें और अल्लाह पाक को अधिक से अधिक याद करें ताकि कल मृतकों में होने के बाद उनके प्रकार बिना लाभ इच्छा न करें ।

जब आप कोई पाप तथा अवज्ञा करना सोचें तो मृतकों की इच्छाओं को याद कर लें, याद कर लें कि उन की इच्छा है कि वे अल्लाह पाक की फरमाँबरदारी एवं आज्ञापालन के लिये पुनः संसार का जीवन पाजायें, तो आप कैसे अल्लाह पाक का अवज्ञा तथा नाफरमानी करोगे। जब भी आप खाली बैठें तो मृतकों की इच्छायें याद करें०००००००। जब अल्लाह पाक की इताअ़त तथा आज्ञापालन में सुसती होने लगे तो मृतकों की इच्छायें याद करें०००००००००।

जब मनुष्य के समाधि में अच्छाइयाँ एक के पीछे एक उत्तरोत्तर) आती हैं, उस समय बहुत प्रसन्न होता है, चाहे किसी नातेदार की ओर से या किसी निकटतम या मित्र की ओर से, या अपने पीछे छोड़े हुये इल्म-ज्ञान- से, या अपने किये हुये दान से। निःसंदेह नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने शुभसूचना दी है कि कुछ लोगों के कर्मों का फल उनके मृत्यु के बाद भी जारी रहेगा। जैसा कि अबू उमामह रज़ियल्लाहु अ़न्हु बयान करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फरमायाः चार ऐसे लोग हैं जिनका फल तथा सवाब मृत्यु के बाद भी जारी रहेगाः जो अल्लाह के मार्ग में चौकेदारी करते मरे, जिसने कोई धर्म का ज्ञान एवं इल्म सिखाया तो जब उस इल्म पर अ़मल किया जायेगा उसका

फल जारी रहेगा, जिसने कोई सदक़ह जारियह (जारी दान) किया तो जब तक वह पाया जायेगा उसका फल उसे मिलेगा, जिसने नेक तथा सदाचारी पुत्र (संतान) छोड़ा और वे उसके लिये दुआ़ करे। (अल्फतहुर्रब्बानी/9/204, सही तरग़ीब व तरहीब/अल्बानी/114)

परन्तु जिस व्यक्ति के मृत्य के साथ साथ उसके पाप न मरें, तो ऐसा व्यक्ति अपने हाथों की बुरी कमाई तथा अपने पापों से मुक्ति पाने की आशा से संसार में लौटने की इच्छा करेगा। जैसे नाचने,गाने वाले फिल्मी स्टार, जिन लोगों नें फनकारी को किसी प्रकार के मेड़िया में रिकार्ड किया तथा मृत्यु से पहले सच्ची तौबह नहीं किया और यह सब बुरे कर्म लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकने के लिये बराबर चल रहे हैं।तो ऐसे लोग संसार में पुनः लौटने की इच्छा करेंगे। ताकि अपने किये से छुटकारा तथा मुक्ति पालें, और अपने उन पापों को बन्द कर दें जिनका फल बराबर उनके मृत्य के बाद भी जारी है, तथा अपने छोड़े हुये कर्मों में नेक कर्म कर लें।

प्रश्न यह है कि ऐसे लोगों ने अपने बाद क्या छोड़ा है? क्या ऐसे लोगों ने गाने बजाने की चीज़ें, फिल्में तथा अन्य लोगें के अख़लाक़, व्यवहार, कर्तब्य, संबन्ध, अ़क़ीदह एवं

आस्था, सोच,विचार,जीविका चिंता आदि को नष्ट करने वाली चीज़ें नहीं छोड़ा है ? जो अल्लाह तथा उसके रसूल की इताअ़त एवं आज्ञापालन से रोकती हैं ? तो यह इस समय उसका फल तथा सज़ा पाने के साथ साथ उन लोगों की भी सज़ा पा रहे हैं जो प्रलय तक उस पर चलेंगे, लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल् अ़ज़ीम।

मेरे भाइयो ! क्या आप लोगों ने नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का फरमान नहीं सुना ?

((وَمَنْ سَنَّ سُنَّةً سَيِّئَةً فَعُمِلَ بِهَا كَانَ عَلَيْهِ وِزْرُهَا وَوِزْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا مِنْ بَعْدِهِ لَا يَنْقُصُ مِنْ أَوْزَارِهِمْ شَيْئًا))

अर्थः जिसने कोई बुरा मार्ग निकाला और उस पर चला गया या अ़मल किया गया तो निकालने वाले पर उसके पाप के अतिरिक्त उसका भी पाप तथा बोझ होगा जो उसके बाद उस पर चलेगा, और उनके पापों में से कुछ भी कमी ना होगी (मुस्लिम 1017),तिर्मिजी 2675) (सुनन् इब्ने माजह/203)

अतः खुशनसीब(भाग्यशील) वह है जिसके मरते ही उसी के साथ उसके पाप मर जायें, तथा मिस्कीन एवं कंगाल वह है जिसके मरने के साथ उसके पाप न मरें, क्योंकि वह संसार की ओर लौटने की इच्छा करेगा ताकि अपने हाथों की कमाई से छुटकारा तथा मुक्ति पाले, मगर

ऐसा कदापि नहीं हो सकता। अल्लाह पाक ने फरमायाः

﴿حَتَّـــى إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ (٩٩) لَعَلِّـــي أَعْمَلُ صَالِحًا فِيمَا تَرَكْتُ﴾

अर्थः यहाँ तक कि जब उनमें से किसी की मृत्यु आने लगेती है तो कहता है कि हे मेरे रब! मुझे वापस लौटा दे, कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर पुण्य का कार्य करू) सूरह मूमिनून/99)

यह तौबह की घोषणा का स्थान है परन्तु समय खो जाने के बाद, अपनी छोड़ी हुई जीज़ों मे सुधार के लिये संसार में वापसी की इच्छा करेगा, इसी कारण बहुत देर की इच्छा का खण्ड़न आया।

(كَلَّا إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا) المؤمنون: ٩٩ – ١٠٠

अर्थः (यह केवल एक कथन तथा बात है जिस का यह कहने वाला है) क्यों कि यह एक ऐसी इच्छा है जो कठिनाई के समय की गई है, तथा उसके पास दिल में कोई रसद (वेधशाला) नहीं है।

हे अब्दुल्लाह (मरने वालों की इच्छायें) का लेख सदैव अपनी ज़बान तथा ध्यान में रखो, क्यों कि भलाई करने में आप का यह सब से अच्छा सहयोगी होगा अधिक से अधिक भलाई एवं पुण्य के कार्य करो, भालई में दूसरों से आगे बढ़ो, मुसलमानों में से मर जाने वालों के लिये अल्लाह से

दया तथा रहमत माँगों।

हे अब्दुल्लाह ! अल्लाह से भय रखने वाला सदाचारी बनो. अपनी बाक़ी उमर अल्लाह की इताअ़त आज्ञापालन) तथा इबादत में लगा दो, अच्छे प्रकार विश्वास कर लो कि जिस मृतक ने अल्लाह के बारे में कुछ भी कमी की तथा बिना तौबह के मरा तो शर्मिन्दगी से उंगली काटेगा, और अल्लाह की इताअ़त के लिये, लोगों के अपने ऊपर हक़ अधिकार) वापस करने के लिये जीवन लौटाने की इच्छा करेगा, मृतकों के यहाँ एक बार सुब्हानल्लाह कहना संसार तथा संसार की सारी चीज़ों से बेहतर है। निःसंदेह उन्हें विश्वास हो गया कि उनके लिये लाभदायक केवल अल्लाह पाक का आज्ञापालन ही है।

जो आदमी अपने बहुमूल्य समय खेल कूद के साधनों के सामने बैठ कर खोता है, वह अगर जान ले कि मृतक लोग क्या इच्छा तथा तमन्ना कर रहे हैं तो वह अपना एक मिनट भी नहीं खोयेगा, अगर आप जान लें कि संसार में आप के लिये आपकी उमर में से कितना बाक़ी है तो अपनी इच्छायें पूरी करने में लग जायेगें, अधिक से अधिक पुण्य करेंगे, इस लिये अपने पग फिसलने से सावधान रहें, अपनी खेद कम करें, अपनी मृत्यु से पहले अपने जीवन को

गनीमत तथा परिहार समझें।

कुछ ही सेकंड में तुम मृतकों में से हो सकते हो, अतः अल्लाह आप पर दया करे, मरने से पहले अच्छाइयाँ और नेकियाँ इकट्ठा कर लो, अपने रब से तौबह का दरवाज़ह बन्द होने, अचानक मृत्यु से पहले, मोहलत का जब तक समय है इस से पहले कि आप तौबह न कर सकें तौबह की ओर बढ़ो ! अचानक मृत्यु आने से पहले जो कि आप तथा अमल के बीच रुकावट बन जाये फिर आप कहें: (ऐ काश मैं ने अपनी जीवन के लिये कुछ भेजा होता)

याद रखो! आप की जीवन का एक बीता हुवा मिनट, उसकी असंख मृतक इच्छा कर रहे हैं. ताकि उस से लाभ उठा सकें, ताकि उस में अल्लाह से तौबह कर सकें, ताकि उस में एक ही बार अल्लाह को याद कर सकें, प्रन्तु उनकी इच्छायें कदापि पूरी नहीं हो सकतीं, इस लिये आप अपने जीवन का एक पल भी अल्लाह की नाफरमानी में न बितायें. ताकि जिस दिन पछ्तावा लाभदायक न होगा न पछतायें।

अललाह तआ़ला ने फरमाया:

﴿أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ يَا حَسْرَتَا عَلَى مَا فَرَّطْتُ فِي جَنْبِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُ لَمِنَ السَّاخِرِينَ (٥٦) أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ (٥٧) أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ (٥٨) بَلَى قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ

الْكَافِرِينَ (٥٩) وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُمْ مُسْوَدَّةٌ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْمُتَكَبِّرِينَ (٦٠) وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (٦١)﴾ الزمر:٥٦–٦١

अर्थः (ऐसा न हो कि) कोई व्यक्ति कहे कि हाय अफसोस इस बात पर कि मैंने अल्लाह के पक्ष में आलस्य किया बल्कि मैं मज़ाक़ (उपहास) उड़ाने वालों में से था। अथवा कहे कि यदि अल्लाह मुझे मार्गदर्शन प्रदान करता तो मैं संयम लोगों में होता। अथवा यातनाओं को देख कर कहे, काश! एक बार मेरा लौटना हो जाता तो मैं भी सदाचारियों में हो जाता। हाँ हाँ निःसंदेह तुम्हारे पास मेरी आयतें पहुँच चुकी थी जिन्हें तूने झुठलाया तथा घमंड एवं गर्व) किया तथा तू था ही काफिरों में। तथा जिन लोगों ने अल्लाह पर मिथ्यारोपण किया है (अल्लाह पर झूठ गढ़ा है) तो आप देखेंगे कि क़ियामत के दिन उनके मुख काले हो गये होंगें, क्या अंहकार करने वालों का ठिकाना नरक में नहीं? तथा जिन लोगों ने संयम (तक़वा) किया उन्हें अल्लाह उनकी सफ़लता के साथ बचा लेगा, उन्हें कोई दुख स्पर्श भी न कर सकेगा तथा वे न किसी प्रकार दुखी होंगे। (सूरह ज़ुमर/56-61)

अब हम कैसे मृतकों की यातनायें हलका करें?

उन के लिये दुआ़ तथा इस्तिग़फ़ार (क्षमायाचना)

करके, उन के ओर से सदक़ह तथा दान करके, यह उन के लिये सब से उत्तम तथा अफ़ज़ल उपहार एवं दक्षिणा है जिनकी वे हमारी ओर से पहुँचने की आशा तथा इच्छा करते हैं। तो क्या हम इन्हें करते है ?

अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः

وَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ الرَّجُلَ لَتُرْفَعُ دَرَجَتُهُ فِي الْجَنَّةِ فَيَقُولُ أَنَّى هَذَا فَيُقَالُ بِاسْتِغْفَارِ وَلَدِكَ لَكَ

अर्थः आदमी का मक़ाम तथा स्थल स्वर्ग में ऊँचा कर दिया जाता है, तो वह कहता हैः मेरे लिये यह कैसे ? तो उसे उत्तर मिलता हैः तेरे लिये तेरे पुत्र के क्षमायाचना एंव बखशिश माँगने के कारण (सही जामेअ़/1617)

अतः निःस्वार्थता तथा इख्लास के साथ इन मृतको के लिये दुआ़ करें और विशेषत माता पिता के लिये विशिष्ट दुआ़ये, हो सकता है आप के मरने के बाद अल्लाह तआ़ला आप के लिये दुआ़ करने वाला पैदा कर दे।

हम अल्लाह तआ़ला से उसके प्यारे प्यारे नामों तथा प्रमुख गुणों के माध्यम से दुआ़ करते हैं कि वह हमें आखिरत की तय्यारी की तौफ़ीक़ एवं साहस दे, तथा हमें अपनी समाधियों में अफसोस करने वालो में से न बनाये।

लेखकः अबू उ़मर
١١/١٤٢٦/٢٥ हि०
अल्-अहसा, पो०बा० **1153**

अनुवादकः
आपका अपना
अताउर्रहमान सईदी पुत्र अबदुल्लाह सईदी
हरहटा,तुलसीपुर,जिला : बलरामपुर,यु.पी. 271208
आवाहक : इस्लामिक सेंटर अहसा,होफूफ
सऊदी अरब
Atauuahmansayeidi@gmail.com
youtube: ata sayeidi / 0509402066